IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 23, Issue 12, Ser. 1 (December. 2018) 85-87
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

1857 की क्रांति के कारणों का अध्ययन

Parvinder Kumar
PGT-History
GSSS Rabhra Sonipat Haryana

सार

1857 का संघर्ष ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक प्रमुख और महत्वपूर्ण घटना थी। क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ से शुरू हुई, जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि जगहों पर फैल गई। क्रांति की शुरुआत एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, लेकिन समय के साथ इसका स्वरूप ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ बड़े पैमाने पर विद्रोह में बदल गया, जो भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता था।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्राथमिक 50 वर्षों के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के एक विशाल टुकड़े को शामिल किया था। जैसे ही भारत पर ब्रिटिश दिशानिर्देश का प्रभाव बढ़ा, भारतीय जनता में ब्रिटिश सिद्धांत के विपरीत निराशा फैल गई। प्लासी की लड़ाई के सौ साल बाद, ब्रिटिश राज के कठोर और आउट ऑफ लाइन नियम के खिलाफ असंतोष ने एक अवज्ञा के रूप में खारिज करना शुरू कर दिया जिसने भारत में ब्रिटिश सिद्धांत की स्थापना को हिला दिया।

1857 के अवसर की लड़ाई पर चर्चा करते हुए, इससे पहले कि देश के विभिन्न हिस्सों में कई एपिसोड हुए थे। उदाहरण के लिए, अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में, उत्तर बंगाल में संत आंदोलन और बिहार और बंगाल में चुनार आंदोलन हुआ था। उन्नीसवीं शताब्दी में, मालाबार के मोपल्लाह श्रमिकों और बंगाल के रैंकरों द्वारा मुस्लिम गड़बड़ी सहित कुछ मजदूर विकास हुए।

भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती पचास वर्षों में कई पैतृक विद्रोह हुए, उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में भीलों का विद्रोह, बिहार में संथाल और ओडिशा में गोंड और खोंड वंश। हालांकि, इनमें से हर एक के प्रभाव का क्षेत्र असाधारण रूप से प्रतिबंधित था उदाहरण के लिए वे पास की प्रकृति के थे। 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ मूल रूप से समन्वित विद्रोही था। सबसे पहले यह सेनानियों के विद्रोह के रूप में उकसाया गया था, लेकिन बाद में यह एक सामूहिक विद्रोह में बदल गया।

29 मार्च 1857 को, मंगल पांडे नामक एक सेनानी ने अपने अधिकारियों के खिलाफ 'बैरकपुर छावनी' में विद्रोह कर दिया, फिर भी ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों ने इस सैन्य विद्रोह को आसानी से नियंत्रित किया और अपने बल के साथ '34 एन। आई। टूटा हुआ 24 अप्रैल, 3 एल.सी. परेड मेरठ में, 90 घुड़सवार बल में से 85 सैनिक नए कारतूस नहीं लेंगे। इन 85 घुड़सवारों को अनुरोधों की अनदेखी करने के लिए अदालत के सैन्य द्वारा 5 साल की सजा दी गई थी।

The ओपन इनसबर्डिनेशन '10 मई, रविवार को शाम 5 और 6 बजे के बीच कहीं शुरू हुआ। पहला पैर अप्रत्याशित '20 N.I. ' भारत में विद्रोह की शुरुआत, '3 L.C.' से हुई। भीतरघात फैल गया। इन क्रांतिकारियों ने अपने अधिकारियों पर गोली चलाना शुरू कर दिया। मंगल पांडे ने 'प्राल्ट' की शूटिंग की, जबकि 'अफसर बाग' को अंजाम दिया गया। मंगल पांडे को 8 अप्रैल को आयोजित किया गया था। 9 मई को मेरठ में 85 लड़ाके नई राइफल का इस्तेमाल नहीं करेंगे, जिसकी निंदा नौ साल जेल में की गई थी।

1857 के विद्रोह का सिद्धांत राजनीतिक कारण ब्रिटिश सरकार की the लैप इनकार 'या reason सूदखोरी की रणनीति' था। यह अंग्रेजों की विस्तारवादी रणनीति थी जो ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी

के दिमाग की उपज थी। संगठन के प्रमुख प्रतिनिधियों अधिकारियों ने भारतीय राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल करने के लिए कुछ दिशानिर्देशों की स्थापना की। उदाहरण के लिए, जब कोई शासक निःसंतान होता, तो उसका क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य के लिए महत्वपूर्ण होता।

राज्य के नरसंहार की रणनीति के कारण भारतीय प्रभुओं में एक टन निराशा थी। रानी लक्ष्मी बाई के प्राप्त बच्चे को झाँसी की सीट पर बैठने की अनुमति नहीं थी। अंग्रेजी सिद्धांत ने हड़प्पा रणनीति के तहत सतारा, नागपुर और झांसी को ब्रिटिश राज्य में मिला दिया। वर्तमान में विभिन्न शासकों को यह उम्मीद होने लगी कि उनके समेकन में कई दिन नहीं हैं। इसके अलावा, बाजीराव द्वितीय के गले लगे हुए बच्चे नाना साहेब के लाभों को बरकरार रखा गया, जिसने भारत के निर्णय वर्ग में अवज्ञा की भावना को मजबूत किया।

आग में घी का काम उस घटना ने किया जब बहादुर शाह द्वितीय के वंशजों को लाल किले में रहने पर पाबंदी लगा दी गई। कुशासन के नाम पर लार्ड डलहौजी ने अवध का विलय करा लिया जिससे बड़ी संख्या में बुद्धिजीवी, अधिकारी एवं सैनिक बेरोजगार हो गए। इस घटना के बाद जो अवध पहले तक ब्रिटिश शासन का वफादार था, अब विद्रोही बन गया।

विद्रोह के कारण

(क) सामाजिक एवं धार्मिक कारण

भारत में तेजी से पैर पसारती पश्चिमी सभ्यता को लेकर समाज के बड़े वर्ग में आक्रोश था। 1850 में ब्रिटिश सरकार ने हिंदुओं के उत्तराधिकार कानून में बदलाव कर दिया और अब किस्चन धर्म अपनाने वाला हिंदू हीअपने पूर्वजों की संपत्ति में हकदार बन सकता था। इसके अलावा मिशनरियों को पूरे भारत में धर्म परिवर्तन की छूट मिल गई थी। लोगों को लगा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय लोगों को क्रिस्चन बनाना चाहती है। भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही कुछ प्रथाओं जैसे सती प्रथा आदि को समाप्त करने पर लोगों के मन में असंतोष पैदा हुआ।

(ख) आर्थिक कारण

भारी टैक्स और राजस्व संग्रहण के कड़े नियमों के कारण किसान और जमींदार वर्गों में असंतोष था। इन सबमें से बहुत से ब्रिटिश सरकार की टैक्स मांग को पूरा करने में असक्षम थे और वे साहूकारों का कर्ज चुका नहीं पा रहे थे जिससे अंत में उनको अपनी पुश्तैनी जमीन से हाथ धोना पड़ता था। बड़ी संख्या में सिपाहियों का इन किसानों से संबंध था और इसलिए किसानों की पीड़ा से वे भी प्रभावित हुए।

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद भारतीय बाजार ब्रिटेन में निर्मित उत्पादों से पट गए। इससे भारत का स्थानीय कपड़ा उद्योग खासतौर पर तबाह हो गया। भारत के हस्तशिल्प उद्योग ब्रिटेन के मशीन से बने सस्ते सामानों का मुकाबला नहीं कर पाए। भारत कच्ची सामग्री का सप्लायर और ब्रिटेन में बने सामानों का उपभोक्ता बन गया। जो लोग अपनी आजीविका के लिए शाही संरक्षण पर आश्रित थे, सभी बेरोजगार हो गए। इसलिए अंग्रेजों के खिलाफ उनमें काफी गुस्सा भरा हुआ था।

(ग) सैन्य कारण

भारत में ब्रिटिश सेना में 87 फीसदी से ज्यादा भारतीय सैनिक थे। उनको ब्रिटिश सैनिकों की तुलना में कमतर माना जाता था। एक ही रैंक के भारतीय सिपाही को यूरोपीय सिपाही के मुकाबले कम वेतन दिया जाता था। इसके अलावा भारतीय सिपाही को सूबेदार रैंक के ऊपर प्रोन्नति नहीं मिल सकती थी। इसके अलावा भारत में ब्रिटिशन शासन के विस्तार के बाद भारतीय सिपाहियों की स्थिति बुरी तरह प्रभावित हुई। उनको अपने घरों से काफी दूर-दूर सेवा देनी पड़ती थी। 1856 में लार्ड कैनिंग ने एक नियम जारी किया जिसके मुताबिक सैनिकों को भारत के बाहर भी सेवा देनी पड़ सकती थी।

बंगाल आर्मी में अवध के उच्च समुदाय के लोगों की भर्ती की गई थी। उनकी धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक,

उनका समुद्र (कालापानी) पार करना वर्जित था। उनलोगों को लार्ड कैनिंग के नियम से शक हुआ कि ब्रिटिश सरकार उनलोगों को किस्चन बनाने पर तुली हुई है। अवध के विलय के बाद नवाब की सेना को भंग कर दिया गया। उनके सिपाही बेरोजगार हो गए और ब्रिटिश हुकूमत के कट्टर दुश्मन बन गए।

(घ) तात्कालिक कारण

1857 के विद्रोह के तात्कालिक कारणों में यह अफवाह थी कि 1853 की राइफल के कारतूस की खोल पर सूअर और गाय की चर्बी लगी हुई है। यह अफवाह हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों धर्म के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचा रही थी। ये राइफलें 1853 के राइफल के जखीरे का हिस्सा थीं।

विद्रोह का प्रसार

इस घटना के बाद मेरठ छावनी में विद्रोह की आग भड़क गई। 9 मई को मेरठ विद्रोह 1857 के संग्राम की शुरुआत का प्रतीक था। मेरठ में भारतीय सिपाहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी और जेल को तोड़ दिया। 10 मई को वे दिल्ली के लिए आगे बढ़े। 11 मई को मेरठ के क्रांतिकारी सैनिकों ने दिल्ली पहुंचकर, 12 मई को दिल्ली पर अधिकार कर लिया। इन सैनिकों ने मुगल सम्राट बहादुरशाह द्वितीय को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया। शीघ्र ही विद्रोह लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बरेली, बनारस, बिहार और झांसी में भी फैल गया। अंग्रेजों ने पंजाब से सेना बुलाकर सबसे पहले दिल्ली पर अधिकार किया। 21 सितंबर, 1857 ई. को दिल्ली पर अंग्रेजों ने पुनः अधिकार कर लिया, परन्तु संघर्ष में 'जॉन निकोलसन' मारा गया और लेफ्टिनेंट 'हडसन' ने धोखे से बहादुरशाह द्वितीय के दो पुत्रों 'मिर्ज मुगल' और 'मिर्ज ख्वाजा सुल्तान' एवं एक पोते 'मिर्जा अबूबक्र' को गोली मरवा दी। लखनऊ में विद्रोह की शुरुआत 4 जून, 1857 ई. को हुई। यहां के क्रांतिकारी सैनिकों द्वारा ब्रिटिश रेजिडेंसी के घेराव के बाद ब्रिटिश रेजिडेंट 'हेनरी लॉरेन्स' की मृत्यु हो गई। हैवलॉक और आउट्रम ने लखनऊ को दबाने का भरकस प्रयत्न किया, लेकिन वे असफल रहे। आखिर में कॉलिन कैंपवेल' ने गोरखा रेजिमेंट के सहयोग से मार्च, 1858 ई. में शहर पर अधिकार कर लिया। वैसे यहां क्रांति का असर सितंबर तक रहा।

निष्कर्ष

विद्रोह के समाप्त होने के बाद 1858 ई. में ब्रिटिश संसद ने एक कानून पारित कर ईस्ट इंडिया कंपनी के अस्तित्व को समाप्त कर दिया, और अब भारत पर शासन का पूरा अधिकार महारानी विक्टोरिया के हाथों में आ गया। इंग्लैंड में 1858 ई. के अधिनियम के तहत एक 'भारतीय राज्य सचिव' की व्यवस्था की गयी, जिसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों की एक 'मंत्रणा परिषद्' बनाई गई। इन 15 सदस्यों में 8 की नियुक्ति सरकार द्वारा करने तथा 7 की 'कोर्ट ऑफ हाइरेक्टर्स' द्वारा चुनने की व्यवस्था की गई।

संदर्भ

- **https://www.targetwithalok.in/modern-history/1857/**
- **https://www.vivacepanorama.com/revolt-of-1857-2/**
- **https://www.samanyagyan.com/hindi/gk-revolution-of-1857**
- **http://shodhganga.inflibnet.ac.in/**
- **https://www.hindisamay.com/**
- **https://kamyabiexpress.com/1857**
- **https://www.historydiscussion.net/inhindi/essay/revolt-of-1857-in-india-nature-and-results/2085**
- **http://iasshiksha.org/1857**